द्विवर्षीयः शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)

क्रेडिट–आधारितः पाठ्यक्रमः

(As per NCFTE 2009 and Revised Two Years B.Ed NCTE 2014)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के आलोक में पुनर्रचित एवं अद्यतनीकृत

(सरल–मानक–संस्कृत (SSS) के अनुसार क्रियान्वित)

वयं देवानां सुमतौ स्याम

शिक्षाशास्त्रविभागः

(आधुनिक ज्ञान–विज्ञान–संकायः)

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

हरिद्वार– दिल्लीराष्ट्रीयराजमार्गः, बहादराबाद, हरिद्वारम्, उत्तराखण्डः –249402

E-mail : bed@usvv.ac.in website : www.usvv.ac.in

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्क्रम

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों के शिक्षण हेतु भारतीय ज्ञान प्रणाली में समाहित मूल्यों में दक्ष मुख्य रूप से संस्कृत भाषा अध्यापक तैयार करना है। इस पाठ्यक्रम के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नाकिंत हैं –

उद्देश्य छात्राध्यापकों को–

- जीवन के विविध क्षेत्रों में भारतीयता की पुनः प्रतिष्ठा हेतु तैयार करना।
- भारतीय संस्कृति एवं भारतीय भाषाओं के प्रति बहुभाषिकता के सन्दर्भ में व्यापक समझ विकसित करना।
- भारतीय ज्ञान परम्परा में अपना श्रेष्ठ अवदान करने वाले भारतीय मनीषियों के गवेषणापरक कार्यों से परिचित कराना।
- शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्यों से परिचित कराना।
- अधिगमकर्त्ता के मनोविज्ञान की महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं को आत्मसात कराना।
- शिक्षण अधिगम में तकनीकी के प्रयोग की दक्षता विकसित करना।
- समसामायिक भारत में शिक्षा की नीतियों एवं समस्याओं के प्रति समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।
- शास्त्र शिक्षण की विधियों के प्रयोग हेतु अपेक्षित स्तर की क्षमता विकसित करना।
- शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन के महत्त्वपूर्ण सम्प्रत्ययों के प्रयोग की क्षमता विकसित करना।
- विद्यालय प्रबन्धन से सम्बन्धित आवश्यक क्षमताओं का विकास कराना।
- विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा समाधान करने की क्षमता में संवर्द्धन करना।
- संस्कृत शिक्षण के विभिन्न पाठों की शिक्षण विधियों में पारंगत करना।
- विद्यालय स्तर पर अध्यापित अन्य विषयों यथा अंग्रेजी, सामाजिक अध्ययन, हिन्दी के शिक्षण में दक्षता विकसित करना।
- विद्यालय स्तर पर अध्यापित संस्कृत व अन्य विषयों यथा अंग्रेजी, सामाजिक अध्ययन, हिन्दी के शिक्षण का वास्तविक परिस्थितियों में अभ्यास प्रदान करना।
- पर्यावरण शिक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण सप्रत्ययों से अवगत कराना।
- शिक्षा के सन्दर्भ में मूल्यों को पहचानना एवं व्यवहारिक रूप में आत्मसात करना।
- कम्प्यूटर से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रत्ययों को जानना एवं एम.एस.ऑफिस के शैक्षिक प्रयोग की क्षमता विकसित करना।
- योग एवं स्वास्थ्य शिक्षा का शैक्षिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में अवबोध विकसित कराना।
- शिक्षा से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों यथा निर्देशन, लैंगिकतसंवेदीकरण, मानवाधिकारों आदि से अवगत कराना।
- समावेशित शिक्षा तथा सुविधा वंचित वर्गो की समस्याओं के सन्दर्भ में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम का स्वरूप

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम 2400 अंक एवं 96 क्रेडिट्स का है जिसकी क्रियान्विति चार सेमेस्टरों में होगी। प्रत्येक सेमेस्टर 600 अंक एवं 24 क्रेडिट्स का होगा। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत **चार मुख्य घटक – सैद्धान्तिक, प्रायोगिक, विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण एवं शैक्षिक गतिविधियां** हैं। सैद्धान्तिक घटक में 15 कोर्सेज एवं प्रायोगिक (ईपीसी) में 4 कोर्सेज है। इन मुख्य घटकों में कोर्स, उनकी संख्या, अंक एवं क्रेडिटस का निर्धारण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम संरचना का प्रारूप

कुल अंक– 2400

कुल क्रेडिट्स–96+ 8*

कोर्स कोड	कोर्स का नाम	कुल अंक	केडिट्स	कोर्स की सं.	कुल केडिट्स
	प्रथम सेमेस्टर	**600**			**24**
101-102	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	200	04	02	08
103-104	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	200	04	02	08
105	संकेन्द्रिक अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Core Compulsory pedagogy)	100	04	01	04
111	प्रायोगिक – ई.पी.सी. Preacticum EPC	100	01	04(i-iv)	04
	द्वितीय सेमेस्टर	**600**			24
121	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100	04	01	04
122-123	संकेन्द्रिक अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Core Compulsory pedagogy)	200	04	02	08
124-125	संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Elective pedagogy)	200	04	02	08
131	प्रायोगिक – ई.पी.सी. Preacticum EPC	100	01	04(i-iv)	04
	तृतीय सेमेस्टर	**600**			24
141	विद्यालय सम्बद्धता बाह्य (योगात्मक मूल्यांकन)–400 अंक आन्तरिक (संरचनात्मक मूल्यांकन)–100 अंक	500	01	04	20
151	प्रायोगिक – ई.पी.सी–100 अंक	100			04
	चतुर्थ सेमेस्टर	**600**			24
161-164	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	400	04	04	16
165	संकेन्द्रिक वैकल्पिक (Core Elective)	100	04	01 (i-vii)	04
171	प्रायोगिक – ई.पी.सी	100	01	04 (i-iv)	04
112,132,152,172	शैक्षिक गतिविधियां 80% उपस्थिति अनिवार्य	200	02	04	08

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्विवर्षीय पाठ्यक्रम
प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर– कुल अंक– 600
कुल क्रेडिटस – 24 + 2*

क्र0सं0	कोर्स सं	पाठ्यक्रमName of course	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिट्स	घण्टे/सप्ताह
		सैद्धान्तिक		**500**	**20**	**20**
101	1	शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य Philosophical and Social Perspectives of education	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75 +25 Theory+Internal	4	4
102	2	अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान Psychology of Learning & Development	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75 +25 Theory+Internal	4	4
103	3	शिक्षण अधिगम की तकनीकी Technology of Teaching learning	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75 +25 Theory+Internal	4	4
104	4	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व School Management & Leadership	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75 +25 Theory+Internal	4	4
105	5	संस्कृत शिक्षण Teaching of Sanskrit	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75 +25 Theory+Internal	4	4
III		प्रायोगिक – ई.पी.सी. Preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08
(i) (ii) (iii) (iv)		1. संस्कृत सम्भाषण 2. संस्कृत शिक्षण पर आधारित पाठ योजना निर्माण। 3. मनोविज्ञान परीक्षण 4. पाठ्यवस्तु का पठन एवं चिन्तन		40 20 20 20		
112		शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	=80% Attendance
(i) (ii) (iii) (iv) (v)		संस्कृत सप्ताह स्वच्छता अभियान खेल–कूद सांस्कृतिक कार्यक्रम कला सम्बन्धित गतिविधियां				
सत्रीय कार्य की रूपरेखा – कक्षाकक्ष उपस्थिति कक्षाकक्ष प्रस्तुतीकरण/मध्यवर्ती परीक्षा असाइन्मेंट/शोधपत्रलेखन/प्रायोगिककार्य/क्षेत्रीय कार्य				**कुल 25 अंक** 05 अंक 10 अंक 10 अंक		

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम क्रियान्वयन विधियाँ

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जायेगा, विशेषकर संवादपरक व्याख्यान विधि । इसके साथ–साथ प्रस्तुतीकरण, पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन एवं इण्टरेक्टिव बोर्ड वी.सी. के माध्यम से शिक्षण एवं प्रशिक्षण को प्रभावी एवं रोचक बनाया जाएगा। जिन अन्य क्रियान्वयन विधियों का प्रयोग पाठ्यक्रम के सम्पादन हेतु किया जायेगा उनका उल्लेख निम्नलिखित है–

परिचर्चा– इस पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में परिचर्चा विधि का भी प्रयोग दो प्रकार से किया जायेगा। यथायुग्म परिचर्चा एवं समूह परिचर्चा। युग्म परिचर्चा के अन्तर्गत छात्रों के युग्म (जोड़े) बनाकर तथा समूह परिचर्चा में कक्षा को छोटे समूहों में बाटकर शिक्षक द्वारा दिये गये विषय पर चर्चा करवाकर सम्पन्न किया जायेगा। इससे छात्रों में विषय का संश्लेषण, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने से सम्बन्धित दक्षताओं का विकास होगा।

दत्तकार्य– इस विधि का प्रयोग छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति हेतु किया जायेगा। जिसमें मुख्य रूप से विषय का अवबोध, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन तथा समीक्षा से सम्बन्धित क्षमताओं का विकास किया जायेगा।

प्रश्नोत्तरी– इस विधि का प्रयोग इकाई समापन एवं कक्षा शिक्षण के समय किया जायेगा। जिसमे इकाई एवं शिक्षण विषय से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ प्रश्न अध्यापक द्वारा कक्षा छात्रों के विभिन्न समूहों के समक्ष प्रस्तुत करके प्रतियोगिता के रूप में आयोजित किया जायेगा।

विचारावेश– इस रचनाकौशल का प्रयोग छात्रों मे समस्या के सृजनात्मक समाधान हेतु किया जाता है। अतः इस पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं पर कक्षा स्तर पर इसका प्रयोग किया जायेगा।

इकाई परीक्षण– पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित इकाईयों के समापन के पश्चात वस्तुनिष्ठ एवं लघुत्तरीय प्रश्नों पर आधारित मौखिक या लिखित परीक्षण छात्र के अवबोध परीक्षण हेतु किया जायेगा।

परियोजना विधि– इस विधि द्वारा पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान पर आधारित परियोजना निर्माण किया जायेगा।

सैद्धान्तिक पत्रों हेतु प्रश्नपत्र का स्वरूप

कुल अंक –100
75 अंक – बाह्य (लिखित परीक्षा)
25 अंक – आन्तरिक (सत्रीय कार्य)

लिखित परीक्षा हेतु प्रश्नपत्र स्वरूप

प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक/प्रश्न	कुल अंक
1. सैद्वान्तिक (क)	अतिलघु –उत्तरीय	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न)	2 अंक/प्रश्न	5 (प्रश्न) X 2(अंक)–10
(ख)	लघुउत्तरीय	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न)	5 अंक/प्रश्न	5 (प्रश्न) X 5 (अंक)–25
(ग)	दीर्घ–उत्तरीय	कोई भी 04 प्रश्न	20 अंक/प्रश्न	2 (प्रश्न) X 20(अंक)–40
			कुल अंक–	**75 अंक**
2. आन्तरिक सत्रीय मूल्यांकन (प्रायोगिक)	**सत्रीय कार्य** कक्षाकक्ष उपस्थिति कक्षाकक्ष प्रस्तुतीकरण/मध्यवर्ती परीक्षा परीक्षाअसाइन्मेंट/शोधपत्रलेखन/प्रायोगिककार्य/क्षेत्रीय कार्य **योग**			**अंक** 05 अंक 10 अंक 10 अंक **25 अंक**

प्रथमसत्रम्

शिक्षायाः दार्शनिकं समाजशास्त्रीयं च परिप्रेक्ष्यम्

Philosophical and Social Perspectives of Eduaction

प्रथमप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः — 101
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः— 100

उद्देश्यानि — छात्राध्यापकेषु —

- प्रमुखदार्शनिकविचारधाराणां शिक्षायां च तासां प्रभावस्य परिचयप्रदानम्।
- आधुनिकभारतस्य विश्वसमाजस्य च सन्दर्भे शिक्षायाः सामान्योद्देश्यानां परिचयप्रदानम्।
- भारतीयपाश्चात्यविचारकाणां शैक्षिकयोगदानस्य समीक्षात्मकाध्ययनाय प्रेरणाप्रदानम्।
- सामाजिकपरिवर्तनस्य सामाजिकगतिशीलतायाश्च परिप्रेक्ष्ये भारतीयसमाजस्य विश्लेषणम्।
- राष्ट्रियैकता–अन्ताराष्ट्रियसद्भावनाप्रोन्नतौ च सहायताप्रदानम्।
- पाठ्यक्रमयोजनाविकासस्य तथा राष्ट्रियशिक्षानीतेः (1986, 2020) केन्द्रिकपाठ्यक्रमस्य एन.सी.एफ.इत्यस्य विषये चिन्तनपरिप्रेक्ष्यविकासः।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1— शिक्षायाः स्वरूपम् **75 अंकाः**

शिक्षायाः अर्थः, अवधारणा, विश्वस्य भारतीयसमाजस्य च सन्दर्भे शिक्षायाः दार्शनिक–सामाजिक–राजनैतिक प्रभावकारकाणि तत्त्वानि। वैदिक–बौद्ध–मुस्लिम–शिक्षायाः आधुनिकशिक्षायाश्च अवधारणा। शिक्षायाः अभिकरणानि – औपचारिकम्, अनौपचारिकं निरौपचारिकम्, एतेषां भूमिका धारिता परिचर्चा।

अन्वितिः 2–शिक्षा–दर्शनं च

शिक्षादर्शनयोः पारस्परिकसम्बन्धः, शिक्षादर्शनस्य परिप्रेक्ष्ये शैक्षिकोद्देश्यानां, पाठ्यक्रमाणां, शिक्षणाधिगमयुक्तीनां, शिक्षकछात्रसम्बन्धस्य समुदायस्य च भूमिका। आदर्शवादः, प्रकृतिवादः, प्रयोजनवादः, यथार्थवादः च। विविधवादानां समीक्षात्मकं विश्लेषणम्। भारतीयदार्शनिकानां यथा हि स्वामीविवेकानन्दस्य, श्री अरविन्दस्य, महात्मागान्धिनः स्वामिदयानन्दस्य विशिष्टसन्दर्भे एतेषां दार्शनिकविचारधाराणां विशेषतानां च शिक्षायां प्रभावः।

अन्वितिः 3–शिक्षा सामाजिकं परिवर्तनं च

सामाजिकपरिवर्तनस्य अवधारणा, सामाजिकगतिशीलता, सामाजिकनियन्त्रणे शिक्षायाः भूमिका। भारतीयसमाजे उपलब्धानाम् असमानतानां, तासां प्रभावाणाम् च आकलनम्। लिंग–आर्थिक–परिस्थिति–सन्दर्भेषु सामाजिक–सांस्कृतिकसन्दर्भेषु च दृष्टिगतसमस्यानां समाधाने, समाजीकरणे, आधुनिकीकरणे वैश्वीकरणे च शिक्षायाः योगदानम्।

अन्वितिः 4–राष्ट्रियैकता अन्ताराष्ट्रिया सद्भावना च

अर्थः, सम्प्रत्ययः, राष्ट्रिय–एकतायां बाधकतत्वानि, भारतस्य एकतायाः उन्नयने शिक्षायाः दायित्वम्। लोकतन्त्र–धर्मनिरपेक्षताविषयकाः उपहुतयः। वैश्विकसन्दर्भे नैतिकशिक्षायाः, मूल्यानां च विकासे शिक्षायाः भूमिका।

अन्वितिः 5— पाठ्यचर्या

अर्थः, संरचना, विकासश्च। पाठ्यचर्यानिर्माणस्य आधारभूतसिद्धान्तः। पाठ्यचर्याविकासस्य केन्द्रिकानुक्षेत्रं राष्ट्रियशिक्षानीतिः 1986 तथा 2020 इत्यनयोः सन्दर्भे। एन.सी.एफ. 2005 इत्यस्य क्रियान्वितिसम्बन्धिसमस्याः तासां समाधानं च।

सत्रीयकार्यम्

25 अंकाः

1. व्याख्या, संगोष्ठी, प्रस्तुतीकरणम्, वादविवादः (दार्शनिकेषु केषांचन भारतीयशिक्षाविदामुपरि।)
2. उत्तरदायिनागरिकाणां निर्माणे अध्यापकस्य भूमिका।
3. शिक्षा लोकतन्त्रं च, शिक्षा मूल्यं च, परिचर्चा आधारितः संवादः।
4. शिक्षायाः शाश्वतमूल्यानि।
5. राष्ट्रिय–एकतायाः अन्ताराष्ट्रिय–सद्भावनायाश्च उन्नयने शिक्षायाः भूमिका इत्यस्मिन् विषये संगोष्ठी।

प्रथमसत्रम्

अधिगमविकासयोः मनोविज्ञानम्

Psychology of Learning & Development

द्वितीयप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 102
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्यानि– छात्राध्यापकेषु

- शिक्षामनोविज्ञानस्य प्रकृति–क्षेत्र–महत्त्व–विधीनां च विषये अवबोधोत्पादनम्।
- किशोरावस्थायाः विशेषसन्दर्भे मानववृद्धेः विकासस्य विभिन्नावस्थानां प्रकाराणां च निहितार्थावबोधनम्।
- अधिगमसिद्धान्तानां सन्दर्भे अधिगमप्रक्रियायाः परिचयप्रदानम्, अभिप्रेरणया सह अस्य सम्बन्धनिरूपणं च।
- विशिष्टबालकानां तेषां विशेषतानाम् आधारे शिक्षणव्यवस्थायाः संघटनाय प्रशिक्षणप्रदानम्।
- व्यक्तित्वस्य प्रकृतिः विकासः तथा व्यक्तिगतविभिन्नतानाम् अवबोधेन सह मानसिकस्वास्थ्यानुरक्षणस्य उपायाधारितपरिप्रेक्ष्यस्य विकासः।

पाठ्यवस्तु – **75 अंकाः**

अन्वितिः 1– शिक्षामनोविज्ञानम्

अवधारणा (प्राचीनाधुनिकयोः सन्दर्भे) उद्देश्यानि, क्षेत्रम्, विधयः, शिक्षकाय महत्त्वं च। प्राच्यमनोविज्ञानम्–वैदिकलौकिकचिन्तनधारायाः विशेषसन्दर्भे। मनोवैज्ञानिकपरिप्रेक्ष्ये अधिगमकर्त्तुः परिवेशः सुविधावंचितविद्यार्थी च एतेषां मनोसामाजिकविशेषतानां विश्लेषणम्।

अन्वितिः 2– वृद्धिः विकासश्च

अवधारणा विकासस्य सिद्धान्तः च अवस्थाः–बाल्यावस्थायां किशोरावस्थायां च शारीरिक–मानसिक–भाषिक–सामाजिक–संवेगात्मक–नैतिकविकासः तथा तेषां शैक्षिकपरिप्रेक्ष्ये निहितार्थः। किशोरावस्थायां जायमानाः समस्याः तासां समाधानानि च।

अन्वितिः 3–अधिगमः अभिप्रेरणा च

अधिगमस्य अवधारणा, विशेषताः, प्रभावकतत्वानि। प्रकाराः – गैनेमहोदयस्य अधिगमसिद्धान्तः, थार्नडाइकमहोदयस्य सम्बन्धवादः, पावलवमहोदयस्य शास्त्रीयानुबन्धनम्, स्किनरमहोदयस्य क्रियाप्रसूतानुबन्धनम्, कोहलरमहोदयस्य अन्तर्दृष्टिसिद्धान्तः, पियाजेमहोदयस्य संज्ञानवादी अधिगमः। अभिप्रेरणा–अवधारणा, प्रकाराः, मैस्लोमहोदयस्य पदानुक्रमितसिद्धान्तः।

अन्वितिः 4–बुद्धिः विशिष्टबालकः च

बुद्धिः – अवधारणा, प्रकाराः च। बुद्धिसिद्धान्ताः– एककारकसिद्धान्तः, द्विकारकसिद्धान्तः, बहुबुद्धिसिद्धान्तः, समूहकारकसिद्धान्तः। बुद्धेः आधुनिकावधारणाः–भावात्मकबुद्धिः आध्यात्मिकबुद्धिः स्थितप्रज्ञः च। बुद्धिमापनम्–व्यक्तिगतविधयः सामूहिकविधयः च। विशिष्टबालकः–अवधारणा, प्रकाराः च। प्रतिभासम्पन्नः, सृजनात्मकः, अधिगमाक्षमः, दिव्यांगबालकः तथा बालापराधः च।

अन्वितिः 5 व्यक्तित्वं समायोजनं मानसिकस्वास्थ्यं च

व्यक्तित्वम्–व्यक्तित्वस्य भारतीया पाश्चात्या च अवधारणा। व्यक्तित्वस्य प्रकाराः, निर्धारकतत्त्वानि च। व्यक्तित्वमापनम्–आत्मनिष्ठं वस्तुनिष्ठं च। प्रक्षेपीयविधयः। व्यक्तिगतभिन्नताः। समायोजनम्–अवधारणा, विशेषताः, समस्याः समाधानानि च। मानसिकस्वास्थ्यविज्ञानम्–अभिप्रायः, उद्देश्यानि। उत्तममानसिकस्वास्थ्यस्य विशेषताः, प्रभावकतत्त्वानि च।

सत्रीयकार्यम्

25 अंकाः

1- बालकानां व्यक्तिवृताध्ययनम् (Case study) ।
2- विकासस्य विभिन्नावस्थाधारितं प्रस्तुतीकरणम्।
3- अधिगमस्य परीक्षणम्।
4- बुद्धेः विभिन्नाः प्रयोगाः।
5- व्यक्तित्वस्य परीक्षणम्।

***

प्रथमसत्रम्

शिक्षणाधिगमयोः प्रविधिः

Technology of Teaching learning

तृतीयप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः –103 **श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04**

क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम् **अंकाः–100**

उद्देश्यानि – छात्राध्यापकेषु –

- शिक्षणाधिगमप्रक्रियायां प्रविधिप्रयोगपुरस्सरं तंत्रांशप्रयोगकौशलसम्पादनम्।
- शिक्षणस्य अवधारणायाः शिक्षणसूत्राणां च व्यावहारिकपरिस्थितौ निहितार्थावबोधनम्।
- शिक्षणस्य अवस्थायाः स्तराणां च शैक्षणिकपरिस्थितौ अनुप्रयोगार्थं कौशलविकासनिष्पादनम्।
- शिक्षणस्य प्रतिमानानां तथा तेषाम् आधारभूतघटकानां प्रयोगार्थं दक्षताविकासनम्।
- शिक्षणस्य विविधरचनाकौशलानां प्रयोगस्य क्षमतायाः विकासः।
- शैक्षिकप्रविधेः तथा तत्सम्बद्धस्वरूपाणाम् अनुप्रयोगे कौशलस्य विकासः।

पाठ्यवस्तु– **75 अंकाः**

अन्वितिः 1– शैक्षिकप्रविधिः

अभिप्रायः, उद्देश्यं च। शैक्षिकप्रविधेः उपागमाः–कठोरतन्त्रोपागमः, मृदुतन्त्रोपागमः प्रणाल्युपागमश्च। शिक्षणाधिगमप्रक्रियायाम् एतेशाम् अनुप्रयोगः। शैक्षिकप्रविधेः विविधरूपाणि– शिक्षणतकनीकी अनुदेशनात्मकतकनीकी व्यवहारजन्यतकनीकी च। अनुदेशनात्मकोद्देश्यानाम् अभिप्रायः वर्गीकरणं च।

अन्वितिः 2– शिक्षणस्याअवधारणा

अभिप्रायः, वैशिष्ट्यम् च। शिक्षणस्य विभिन्नरूपाणि– अनुबन्धनम्, प्रशिक्षणम्, अनुदेशनम्, मतारोपणं च। एतेषां मध्ये भिन्नता। शिक्षणस्य सिद्धान्ताः, शिक्षणसूत्राणि, अधिगमस्य अवधारणा तथा शिक्षणेन सह सम्बन्धः।

अन्वितिः 3– शिक्षणस्यावस्थाः स्तराश्च

अभिप्रायः वैशिष्टयं च। शिक्षणस्य अवस्थाः –शिक्षणस्य पूर्वम्, शिक्षणकाले, शिक्षणस्य पश्चात् च। एतेषां मध्ये भिन्नता। शिक्षणस्य स्तराः–स्मृतिस्तरः, अवबोधस्तरः, चिन्तनस्तरः च। एतेषाम् अभिप्रायः, अन्तर्निहिताः अधिगमसिद्धान्ताः च। शिक्षणपरीक्षणरचनाकौशलसन्दर्भे एतेषु त्रिषु भिन्नता च।

अन्वितिः 4– शिक्षणस्य प्रतिमानानि

अभिप्रायः, आधारभूततत्त्वानि, आवश्यकता च। शिक्षणप्रतिमानानां प्रकाराः–सामाजिकान्तःक्रियास्रोतः, सूचनाप्रक्रियास्रोतः, व्यक्तिगतस्रोतः, व्यवहारपरिवर्तनस्रोतः च। कानिचन महत्त्वपूर्णानि शिक्षणप्रतिमानानि–आधरभूतशिक्षणप्रतिमानं, सम्प्रत्ययसम्प्राप्तिप्रतिमानं, पृच्छाप्रशिक्षणप्रतिमानं च।

अन्वितिः 5– शिक्षणरचनाकौशलं विविधयुक्तयश्च

अभिप्रायः, भिन्नता, प्रकारः च। प्रभुत्ववादिप्रकारः–व्याख्यानम्, प्रदर्शनम्, अनुवर्गशिक्षणम्, दलशिक्षणम्, अभिक्रमिताधिगमश्च। जनतान्त्रिकप्रकारः–परिचर्चा, परियोजना, विचारावेशः, दत्तकार्याणि भूमिकानिर्वहणं च। सूक्ष्मशिक्षणम् –अभिप्रायः, उद्देश्यम्, प्रक्रिया, अवस्थाः, लाभाः सीमानश्च। अनुरूपितशिक्षणम् – अभिप्रायः, उद्देश्यम्, प्रक्रिया, लाभाः सीमानश्च।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वित्याधारितं व्यष्टिपरकं दत्तकार्यम्।
2. शिक्षणप्रतिमानाधारितं पाठयोजनानिर्माणम्।
3. व्यूहरचनाधारितं प्रतिवेदननिर्माणं प्रस्तुतीकरणं च।
4. संगणकाधारितशिक्षणम्।

***

प्रथमसत्रम्

विद्यालयप्रबन्धनं नेतृत्त्वं च

School Management & Leadership

चतुर्थप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः –104
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्यानि – छात्राध्यापकेषु –

- विद्यालयप्रबन्धनस्यावधारणायाः गुणवत्तायाश्च युक्तीनाम् अनुप्रयोगाय कौशलानां विकासः।
- विद्यालयस्य भौतिकसंसाधनानां व्यवस्थायाश्च विषये अवबोधोत्पादनम्।
- विद्यालयस्य मानवीयसंसाधनानां दायित्त्वानां विशेषतायाश्च आधुनिकसन्दर्भे निहितार्थस्यविकासनम्।
- समयसारिणी–पाठ्यक्रमसहगामिक्रियाणां नियोजनसम्बन्धिकौशलानां च विकासः।
- विद्यालयस्य विभिन्नाभिलेखानां पंजिकानां च संरक्षणस्य आवश्यकतायाः, महत्त्वस्य चावबोधः।
- पर्यवेक्षणनिरीक्षणयोः अवधारणा, तदाधारेण व्यावहारिकपरिस्थितीनां विषये अवबोधोत्पादनम्।

पाठ्यवस्तु– **75 अंकाः**

अन्वितिः 1– विद्यालयप्रबन्धनम् –

अवधारणा, अभिप्रायः, उद्देश्यानि च। सम्पूर्णगुणवत्ताप्रबन्धनस्य (T.Q.M.) अवधारणा। एन.सी.ई.आर.टी, एस.सी.ई. आर.टी. NEP–2020 सन्दर्भे विद्यालयसंरचना। राज्यस्तरीयः शिक्षानिदेशालयः, सी.बी.एस.ई., राज्यस्य संस्कृतशिक्षापरिषत् च।

अन्वितिः 2– विद्यालयस्य भौतिकसंसाधनानि

विद्यालयभवनम्, प्रकाराः, कक्षाकक्षः, आसन्दादिकं तेषां व्यवस्था। वर्तमानसन्दर्भे आधारभूतायाः भौतिकसंरचनायाः महत्त्वम् उपयोगश्च। प्रबन्धप्रशासनयोः भेदः। प्रबन्धनस्य युक्तयः। विद्यालयस्य संगठनात्मकः परिवेशः।

अन्वितिः 3–विद्यालयस्य मानवीयसंसाधनानि

प्रधानाध्यापकः, प्रभारी प्रधानाध्यापकः। शिक्षकाणां वैशिष्ट्यं दायित्वं च। उत्तमशिक्षकस्य गुणाः। शैक्षिकनेतृत्वस्यावधारणा। महर्षेःकण्वस्य शैक्षिकप्रबन्धनम्।

अन्वितिः 4– विद्यालयव्यवस्थायां नियोजनम्

विद्यालयव्यवस्थायां नियोजनस्य क्रियान्वयनम्, अनुश्रवणम्, नियन्त्रणं च। विद्यालयप्रबन्धनस्य युक्तयः – आष्टांगिकघटकाः (आक्टोपेस)। अनुशासनम् – आवश्यकता, महत्त्वं प्रकाराश्च।

अन्वितिः 5– विद्यालयस्य विभिन्नाः अभिलेखाः

अभिप्रायः, अभिलेखानाम् आवश्यकता, महत्त्वं संरक्षणं च। पर्यवेक्षणं निरीक्षणं च। अनयोः अवधारणा प्रकाराः च। निरीक्षणपर्यवेक्षणयोर्भेदः उपादेयता च।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. विद्यालयस्य पार्श्वचित्रनिर्माणम्।
2. विश्लेषणात्मकाध्ययनाधारिता प्रतिवेदनप्रस्तुतिः।
3. विद्यालयस्य विभिन्नाभिलेखेषु कस्यापि एकस्य विश्लेषणाधारेणोपयोगः।
4. विद्यालयगतिविधीनां लिखितं विवरणम्।
5. शिक्षकाणां विषये भारतीयसाहित्ये उल्लिखितसूक्तीनां संग्रहः।

***

प्रथमसत्रम्

संस्कृतशिक्षणम्
Teaching of Sanskrit
पंचमप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः –105
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्यानि – छात्राध्यापकेषुः–

- संस्कृतभाषायाः वैज्ञानिकं सांस्कृतिकं व्यावसायिकं महत्त्वं ज्ञास्यन्ति।
- शिक्षणस्य विभिन्नस्तरेषु संस्कृतभाषाशिक्षणस्य महत्त्वम् आवश्यकतां च अवगमिष्यन्ति।
- संस्कृतभाषाशिक्षणं प्रभावपूर्णं विधातुं विभिन्नशिक्षणकौशलनानां प्रयोगे दक्षतां प्राप्स्यन्ति।
- संस्कृतभाषायाः प्रभाविशिक्षणविधीनां ज्ञानेन सहैव पाठयोजनानिर्माणयोग्यतां प्राप्स्यन्ति।
- संस्कृतभाषाशिक्षणे रुच्युत्पादनाय दृश्य–श्रव्यसाधनानां पाठ्यसहगामिक्रियाणां च प्रयोगे दक्षाः भविष्यन्ति।
- सरल–मानक–संस्कृतस्य प्रयोगपुरस्सरं प्रभाविविषयशिक्षणस्य व्यावहारिकं ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1–संस्कृतभाषायाः महत्त्वम् **75 अंकाः**

संस्कृतभाषायाः उद्भवो विकासश्च। संस्कृतभाषायाः सांस्कृतिकम्, आध्यात्मिकं च महत्त्वम्। संस्कृतभाषायाः अन्यभाषाभिः सह सम्बन्धः। मूल्यशिक्षायाः सन्दर्भे संस्कृतम्। आधुनिकभारते संस्कृताध्यापनस्य महत्त्वम्। पाठ्यक्रमे संस्कृतभाषायाः स्थानं त्रिभाषासूत्रं च। प्राथमिक–माध्यमिक–उच्चस्तरे संस्कृत शिक्षणस्य उद्देश्यानि।

अन्वितिः 2– संस्कृतभाषाविज्ञानं संस्कृतशिक्षणस्य विधयः च

(क) संस्कृतभाषाविज्ञानम् – ध्वनि–रूप–वाक्यविज्ञानम् एतेषां। संक्षिप्तपरिचयः भाषाप्रयोगशालायाश्च सहायतया एतेषाम् अभ्यासः भाषाकौशलानि च। (ख) संस्कृतशिक्षणस्य विधयः – परम्पराविधिः, भण्डारकरविधिः, मौखिकविधिः, प्रत्यक्षविधिः, पाठ्यपुस्तकविधिः, आगमननिगमनविधिः, समाहारविधिः च।

अन्वितिः 3– संस्कृतशिक्षणस्य विभिन्नविधानां शिक्षणम्

उच्चारणशिक्षणम्, गद्य–पद्य–व्याकरण–नाटकशिक्षणम्। एतेषां स्वरूपम्, शिक्षणोद्देश्यानि, शिक्षणविधयः पाठयोजनाश्च।

अन्वितिः 4–संस्कृतशिक्षणे नवाचाराः

संस्कृतशिक्षणे दृश्यश्रव्योपकरणानां प्रयोगाः अभिनवप्रयोगाश्च। (यथा–ई अधिगमः) संस्कृतशिक्षणे पाठ्यसहगामिक्रियाः– भाषाक्रीडाः, वादविवादः, संगोष्ठी, अन्त्याक्षरी, गीतानिश्लोकोच्चारणम्। संस्कृतपाठ्यपुस्तकस्य उद्देश्यं रचनासिद्धान्तः च।

अन्वितिः 5–संस्कृतशिक्षणे परीक्षा तथा च मूल्यांकनम्

अवधारणा उददेश्यानि च। मूल्यांकनस्य आवश्यकता। शलाकापरीक्षा, विवेचनात्मकशक्तिपरीक्षा, योग्यतापरीक्षा तथा नवीनपरीक्षाप्रविधयः।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. विविधस्तरीयसंस्कृतपाठ्यक्रमस्य विश्लेषणम्।
2. संस्कृतवार्तापत्रिकाणां संकलनं महत्त्वपूर्णतथ्यानां च चयनम्।
3. संस्कृतवार्त्तायाम् उच्चारणं, शब्दचयनं, संवादः समाचारलेखनं च।
4. भाषाप्रयोगशालाधारितः उच्चारणाभ्यासः, सम्भाषणाभ्यासः च।
5. संस्कृतस्य विभिन्नविधासु पाठयोजनानिर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः –

1 सफाया, आर.एन., संस्कृतशिक्षण, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, हरियाणा।
2 पाण्डेय, आर.एस. संस्कृतशिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा उ0प्र0।
3 मित्तल, संतोष, संस्कृतशिक्षणम्, नव चेतना पब्लिकेशंस, जयपुर।

***

द्वितीयसत्रार्द्धम्

अधिगम–आकलनम्

षष्ठप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 121
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्यानि छात्राध्यापकेषु

- अधिगमाकलनस्य स्तराणां यथा–परीक्षा–आकलनम्, उपकरण–निर्माणं तेषाम् अनुप्रयोगः परिणामानां च विश्लेषणस्य प्रवीणतायाः विकासः।
- अधिगमाकलनस्य नवीनप्रतिमानानामनुप्रयोगाय दक्षतासंवर्धनम्।
- आकलने प्रयुक्त–सांख्यकीयसंगणकाधारितप्रकरणानां प्रभावपूर्णोपयोगाय क्षमतायाः विकासः।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1–मापनं मूल्यांकनं च **75 अंकाः**

मापनं मूल्यांकनम्, आकलनम् एतेषु सम्प्रत्ययात्मकदृष्ट्या भेदः एतेषाम् उपयोगश्च। मूल्यांकनस्य प्रकाराः– योगात्मकं संरचनात्मकं निदानात्मकं च। मापनस्य स्तराः–नामितः, क्रमितः, अन्तरितः, आनुपातिकश्च।

अन्वितिः 2–अधिगम–आकलनम्

अधिगम–आकलनस्य स्तरः। आकलनस्य विविधसन्दर्भाः– विषयवस्त्वाधारितः व्यक्ति–आधारितः सन्दर्भः, आकलनस्य उपयुक्तनिकषाणां निर्धारणम्। व्यक्तिगतानुभवानामाधारः तथा स्वाकलनस्य सहपाठि–आधरिताकलनस्य विश्लेषणम्।

अन्वितिः 3–मापनस्य उपकरणनिर्माणप्रविधिः

अभिप्रायः, प्रयोजनं महत्त्वं च। उपकरणानि–प्रश्नावली, अनुसूची, निर्धारणमापनी, रुपिक्स इति च। तकनीक–साक्षात्कारः, अवलोकनं, सहपाठी–आकलनम्, अभिलेख–अधिगमः, लॉगजर्नल्स चेति। वृतान्त–अभिलेखः, समग्रप्रत्यभिलेखः–360, पार्श्वचित्रम्।

अन्वितिः 4–उपलब्धिपरीक्षणम्

अभिप्रायः, प्रकाराः–निबन्धात्मकम्, वस्तुनिष्ठम्, प्रमापीकृतम्, अप्रमापीकृतपरीक्षणम्। परीक्षणनिर्माणम्–सोपानम्, ब्लूप्रिंटनिर्माणम्, परीक्षणनिर्माणम्–पदलेखनं, प्रश्नपत्रनिर्माणम्। उत्तमपरीक्षणस्य गुणाः।

अन्वितिः 5–प्राप्तांकानां विश्लेषणं प्रतिपुष्टिश्च

केन्द्रीयप्रवृत्तीनां मानम्, मानकविचलनम्, सहसम्बन्धस्य अभिप्रायः प्रकाराश्च, श्रेणी–अंकनस्य अभिप्रायः प्रकाराश्च। प्रतिपुष्टिः अभिप्रायः, उद्देश्यं महत्त्वं च।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः–

1. गुप्ता, एस.पी. (2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. अस्थाना, विपिन, (1999) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
3. भार्गव, महेश, (1990) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, भार्गव बुक डिपो, आगरा।
4. पाण्डेय, के.पी. (2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी।

द्वितीयसत्रार्द्धम्

समसामयिकं भारतं शिक्षा च

सप्तमप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 122
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्यानि छात्राध्यापकेषु

- सामाजिक–राजनीतिक–आर्थिकपरिप्रेक्ष्ये शिक्षायाः विकासस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्।
- शिक्षायाः विकासः, विभिन्नसमितीनामायोगानां च योगदानस्य परिज्ञानम्
- स्वतन्त्रताप्राप्तेः पश्चात् शिक्षायाः विकासाय कृतकार्याणामभिज्ञानम्, शैक्षिकनीतिदृष्ट्या तेषामवबोधनम्।
- शिक्षायाः विभिन्नस्तरेषु व्याप्तसमसामयिकसमस्यानां समाधानाय क्रियमाणानां प्रयासानां परिचयप्रदानम्।
- शिक्षायाः नवीनसमस्यानां समीक्षात्मकं विश्लेषणं तेषां समाधानाय जागरूकतोत्पादनम्।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1–प्रारम्भिकशिक्षा **75 अंकाः**

आवश्यकता, उद्देश्यम्, सार्वभौमीकरणम्, आपरेशन–ब्लैक–बोर्ड, अपव्ययावरोधनम् अन्याः समस्याः समाधानं च। सर्वशिक्षाभियानं शिक्षायाः अधिकाराधिनियमः (2009), रमसा योजना समग्रशिक्षाभियानं च।

अन्वितिः 2– माध्यमिकी व्यावसायिकी च शिक्षा

अवधरणा, महत्त्वम्, उद्देश्यम्, समस्याः समाधानं च, राष्ट्रियमाध्यमिकशिक्षाभियानम्, माध्यमिकशिक्षायाः व्यावसायीकरणम्, व्यावसायिकशिक्षायाः अवधारणा, महत्त्वम्, उद्देश्यं, समस्याः समाधानं च।

अन्वितिः 3– उच्चशिक्षा

अवधारणा, महत्त्वम्, उद्देश्यं समस्याः समाधानं च। उच्चशिक्षायां स्वायत्तता गुणवत्ता च। राष्ट्रिय–उच्चशिक्षाभियानम् (रूसा) विश्वविद्यालय–अनुदान–आयोगस्य भूमिका।

अन्वितिः 4– अध्यापकशिक्षा

भारतीयज्ञानपरम्परायाम् अध्यापकशिक्षा, दत्तात्रेयस्य गुरुसंकल्पना। शिक्षकप्रशिक्षणस्य विभिन्नाः स्तराः। पूर्वसेवा सेवारतशिक्षकप्रशिक्षणे केन्द्रप्रायोजितकार्यक्रमाः। अध्यापकशिक्षायां विश्वविद्यालयकार्यसंवर्धनस्योपायाः, सूचना– सम्प्रेषणस्यानुप्रयोगः। अध्यापकशिक्षायां गुणवत्तासम्बन्धिनवीनायामः। अध्यापकशिक्षायाम् एन.सी.टी.ई. तथा एस.सी.ई.आर.टी. इत्येतयोः भूमिका।

अन्वितिः 5–स्त्रीशिक्षा

अवधारणा, उद्देश्यं, महत्त्वं, स्त्रीशिक्षायाः विविधाः समस्याः तासां समाधानं च। स्त्रीशिक्षायाः विकासे सर्वकारीयाशासकीय संस्थानां तथा राष्ट्रस्तरीयराज्यस्तरीयानां शीर्षनियामकशिक्षणसंस्थानां भूमिका। दुर्गाबाईदेशमुखसमितिः, हंसामेहतासमितिः, तयोः संस्तुतयश्च। अनुसूचितजाति–अनुसूचितजनजातीयानां शिक्षायाः अवधारणा उद्देश्यं, समस्याः समाधानं च। उत्तराखण्डराज्ये स्त्रीशिक्षायाः समुन्नत्यै संचालिताः योजनाः यथा (गौरादेवीकन्याधनयोजनाकार्यक्रमः)।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः–

1. वासु (1985) एजुकेशन इन मॉर्डन इण्डिया (ओरिएण्ड बुक कम्पनी) नई दिल्ली।
2. भगवान दयाल (1991) दी डेवलपमेंट ऑफ माडर्न इण्डियन एजूकेशन (ओरिएण्ड–लोंगमास) लंदन।
3. गुप्ता, एस.पी. (2000) भारतीय शिक्षा का इतिहास व समस्याएं, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद
4. कबीर, हुमायूं (1980) एजूकेशन इन न्यू इण्डिया एशिया बुक हाउस, मुम्बई।
5- Pathak, R.P (2006) Global Trends and Development of Education in Mordern India, Atlantic Publishers Ansari Road, Daryagang New Delhi

द्वितीयसत्रार्द्धम्

शिक्षायां क्रियात्मकानुसन्धानम्

अष्टमप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 123
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्यानि छात्राध्यापकेषु

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

- शैक्षिकानुसन्धानस्य विभिन्नरूपाणाम् अवधारणया परिचिताः भविष्यन्ति।
- क्रियात्मकानुसन्धानस्य प्रकारान् आवश्यकतां च ज्ञास्यन्ति।
- क्रियात्मकानुसन्धानस्य प्रक्रियायाम् अन्तर्निहितानां सोपानानाम् अवबोधं प्राप्स्यन्ति।
- क्रियात्मकानुसन्धानस्य परिणामानां संख्याशास्त्रानुगुणं विश्लेषणे सक्षमाः भविष्यन्ति।
- क्रियात्मकानुसन्धाने परियोजनानिर्माण–क्रियान्वयन–प्रतिवेदनलेखनेषु च सक्षमाः भविष्यन्ति।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः1– शैक्षिकानुसन्धानम् **75 अंकाः**

अनुसन्धानस्य अवधारणा, कार्यं महत्वं च। अनुसन्धानस्य मौलिकं व्यवहृतं क्रियात्मकस्वरूपम्। एतेषाम् अभिप्रायः, उद्देश्यं सीमाङ्कनं च। मौलिकव्यवहृतक्रियात्मकानुसन्धानेषु अन्तरम्। क्रियात्मकानुसन्धानस्य अवधारणा, विशेषता, ऐतिहासिकपरिप्रेक्ष्यं महत्वं क्षेत्रं च।

अन्वितिः 2– क्रियात्मकानुसन्धानस्य आवश्यकता अनुप्रयोगश्च

विद्यालय–कक्षा–शिक्षकाणां सन्दर्भे। क्रियात्मकानुसन्धानस्य प्रकाराः, व्यक्तिगत–प्रतिभागाधारितविद्यालयजनपदस्तरीयं च क्रियानुसन्धानम्।

अन्वितिः 3– क्रियात्मकानुसन्धानस्य प्रक्रिया

समस्यायाः अभिज्ञानं, समस्यायाः परिभाषीकरणं, सीमांकनं, सम्भावितकारणानाम् अन्वेषणं, क्रियात्मकप्राक्कल्पनानिर्माणं, क्रियात्मकप्राक्कल्पनायाः क्रियान्वयनाय कार्ययोजनाविकासः, परिणामस्य मूल्यांकनं च। क्रियात्माकानुसन्धानस्य अभिकल्पः– विशेषताः, संरचनात्मकघटकानि, तत्प्रकारः व्यावहारिकः प्रतिभागाधारितश्च, अनयोः अन्तरं समानता च।

अन्वितिः 4– विद्यालयपरिस्थितौ क्रियात्मकानुसन्धानम्

क्रियात्मकानुसन्धानस्य परियोजनानिर्माणम् प्रारूपम्, अपेक्षितावधानं, महत्वपूर्णाशाः। विद्यालयपरिस्थितिसम्बद्धस्य कस्यचिदेकस्य क्रियात्मकानुसन्धानस्य प्रतिवेदनलेखनम्।

अन्वितिः 5– संस्कृशिक्षणे क्रियात्मकानुसन्धानम्

अवधारणा, आवश्यकता, महत्त्वं च। श्रवण–भाषण–पठन–लेखनकौशलानां विकासाय क्रियात्मकानुसन्धानम्। समस्याः समाधानोपायाश्च।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थ–

1. सक्सेना. एन. आर. स्वरूप (1996) एवं ओबराय, एस.सी शिक्षण की तकनीकी, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
2. रूहेला, एस.पी. (1973) शिक्षण तकनीकी, राज प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सुखिया, एस.पी. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, उ0प्र0।
4. तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, उ0प्र0।
5. पाठक, एवं उपाध्याय, शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान, अभिषेक प्रकाशन पीतमपुरा, दिल्ली।
6. पाठक, आर0पी0, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, राधा प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज दिल्ली।
7. भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2014) विद्यालयीय शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

द्वितीयसत्रार्द्धम्

शास्त्रशिक्षणम्
नवमप्रश्नपत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

निर्देशः – अस्य पाठ्यक्रमस्य उत्तरं केवलं संस्कृतभाषया एव लेखनीयम्।

उद्देश्यानि छात्राध्यापकेषुः–

1. विविधशास्त्राणां महत्त्वम् उपयोगितां च विज्ञाय संस्कृतशास्त्राणामध्ययने रुचेः जागरणम्।
2. शास्त्राणां विभिन्नविधानाम् अध्ययनाय परम्परागताधुनिकशिक्षणविधीनां ज्ञानम्।
3. शास्त्रशिक्षणस्य पाठयोजनानिर्माणे प्रावीण्योत्पादनम्।
4. शास्त्रशिक्षणं रोचकं विधातुंनवीनतमं स्वरूपं च प्रदातुं दृश्यश्रव्यसाधनानां कौशलप्रयोगस्य च ज्ञानप्रदानम्।
5. विविधशास्त्रेषु वर्णितेन विषयवस्तुना नैतिक–चारित्रिक–सांस्कृतिक–सामाजिक–मूल्यानां परिचयप्रदानम्।

निर्देश : – अधेलिखितेषु कश्चन एकः विषयः चेतव्यः।

9.1 ज्योतिषशिक्षणम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124 (1)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
पाठ्यवस्तु –

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100
75 अंकाः

अन्विितिः 1 ज्योतिषशिक्षणस्य स्वरूपं महत्त्वमुद्देश्यानि च।

अन्विितिः 2 नैदानिकपरामर्शे ज्योतिषशास्त्रस्य भूमिका।

अन्विितिः 3 अध्यापनं प्रभावपूर्णं विधातुं सहायकोपकरणानां प्रयोगः।

अन्विितिः 4 ज्योतिषशिक्षणस्य प्रतिमानानि– यात्रामुहूर्त्तम्, विवाहमुहूर्तम्, सूर्यग्रहणम्, चन्द्रग्रहणम्, जन्मकुण्डली निर्माणम्, मेलापकनिर्माणम्।

अन्विितिः 5. ज्योतिषशिक्षणविधयः– आगमननिगमनविधिः, विश्लेषणम् "ह्यूरिष्टिकविधिः,परियोजनाविधिः, प्रश्नोत्तरविधिः, पाठयोजनानिर्माणम्, नवाचाराः, मूल्यांकनम्।

सत्रीयकार्यम्– **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः–

1. झा., नागेन्द्र ज्योतिषशिक्षणम्।

***

9.2 साहित्यशिक्षणम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124 (2)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

पाठ्यवस्तु – **75 अंकाः**

अन्विितिः1– साहित्यशिक्षणस्य स्वरूपम्, महत्त्वमुद्देश्यानि च ।
अन्विितिः 2– भाषा, विषयवस्तु, कल्पना, सौन्दर्यानुभूतिः।
अन्विितिः3– रसानुभूतौ रसस्य, छन्दसाम्, अलंकाराणाम् उपयोगित्त्वम्।
अन्विितिः4– साहित्यशिक्षणस्य विधयः–पारम्परिकविधिः, व्याख्याविधिः, टीकाविधिः, स्वाध्यायविधिः क्रीडाविधिः, खण्डान्वय–दण्डान्वयविधिः च।
अन्विितिः 5 – पाठयोजनानिर्माणं नवाचाराश्च।

सत्रीयकार्यम् – **25 अंकाः**

1. इकाईसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधलेखलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः

1. मिश्र, लोकमान्य, साहित्यशिक्षणम्।
2. उपाध्याय, बी.के., एवं मिश्र घनश्याम, साहित्यशिक्षण पद्धति, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी।

9.3 दर्शनशिक्षणम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124 (3)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
पाठ्यवस्तु –

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100
75 अंकाः

अन्विितिः 1– प्राच्यपाश्चात्यदर्शनयोः सम्प्रत्ययः ।
अन्विितिः2– दर्शनशिक्षणस्य महत्त्वम्, उद्देश्यं च। दर्शनशिक्षणस्य विधयः विकासविधिः, इतिहासविधिः, समस्याविधिः, निदर्शनविधिः, निरीक्षणाधीनस्वाध्यायः, व्याख्याविधिः।
अन्विितिः 3– दर्शनं सामाजिकविकासश्च, दार्शनिकपरामर्शः।
अन्विितिः4– दर्शनशिक्षणे शिक्षणाधिगमसामग्री, दूरस्थशिक्षायां दर्शनम्।
अन्विितिः 5– दर्शनशिक्षणस्य पाठयोजना।

सत्रीयकार्यम् **25 अंक**

1. अन्विितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः

3. सर्वदर्शन समन्वय, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। विद्यापीठ।
4. शास्त्री, पी.एन, दर्शन शिक्षण, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर।

***

9.4 व्याकरणशिक्षणम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124 (4)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
पाठ्यवस्तु –

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100
75 अंकाः

अन्वितिः 1– व्याकरणशास्त्रशिक्षणस्य इतिहासः, स्वरूपम्, उद्देश्यानि च ।

अन्विति: 2 – व्याकरणशिक्षणे कण्ठस्थीकरणस्य महत्त्वम् उच्चारणशिक्षणं च।

अन्विति: 3 – व्याकरणशिक्षणस्य विधयः– पारम्परिकविधिः–आगमननिगमनविधिः–ह्यूरिष्टिकविधिः समस्यासमाधानविधिः।

अन्विति: 4 – व्याकरणशिक्षणे दृश्यश्रव्योपकरणानां प्रयोगः। प्रायोगिकव्याकरणम्। (Functional Grammar)

अन्विति: 5– भाषाप्रयोगशाला व्याकरणं च –व्याकरण शिक्षणे संगणकप्रयोगः। पाठयोजनानिर्माणम्।

सत्रीयकार्यम्–

25 अंकाः

1. अन्तितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः –

1. उपाध्याय, बी.के., एवं देवनाथन आर., व्याकरण शिक्षण विधि, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी।

9.5 वेदशिक्षणम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124 (5)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
पाठ्यवस्तु –

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100
75 अंकाः

अन्विति: 1– वेदानां महत्त्वम्, शिक्षणोद्देश्यानि, वेदकण्ठस्थीकरणस्य पारम्परिकपारायणविधिः आधुनिकविधिश्च।

अन्विति: 2–स्वाध्यायस्यावश्यकता महत्त्वमुद्देश्यानि च।

अन्विति: 3– वेदानां मूलपाठस्य व्याख्याने मीमांसा–कल्पसूत्र–निरूक्तादीनां महत्त्वम्।

अन्विति: 4– वेदानां प्राचीन–नवीन–व्याख्याकाराणां समीक्षा।

अन्विति: 5– पाठयोजनानिर्माणम् नवाचाराश्च।

सत्रीयकार्यम् –

25 अंकाः

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः

1. प्रमेय पारिजात श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
2. मिश्र, भास्कर, वैदिक शिक्षा पद्धति।
3. पाठक, आर.पी. प्राचीन भारतीय शिक्षा कनिष्का प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली।

9.6 कर्मकाण्डशिक्षणम्

पाठ्यक्रमकूटः – 124 (6) **श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04**

क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम् **अंकाः– 100**

पाठ्यवस्तु – **75 अंकाः**

अन्वितिः 1–कर्मकाण्डस्य सामाजिकं सांस्कृतिकं च महत्त्वमुद्देश्यानि च। कर्मकाण्डस्य प्रकाराः। षोडशोपचारपूजनविधिः, यज्ञश्च।

अन्वितिः 2– क्रिययाधिगमः। मानवजीवने कर्मकाण्डस्य आवश्यकता।

अन्वितिः 3– हयूरिष्टिकविधिः, प्रयोजनाविधिः, प्रत्यक्षविधिः, व्याख्यानविधिः।

अन्वितिः 4– अध्यापकसुगमतायै चित्रम्, रेखाचित्रम्, अन्यदृयश्रव्योपकरणानां प्रयोगः।

अन्वितिः 5– वैज्ञानिकोपकरणानामुपयोगो वेदीनिर्माणं पाठयोजना निर्माणं च।

सत्रीयकार्यम् – **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः

1. झा., नागेन्द्र वैदिक शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति, वेंकटेश प्रकाशन, दिल्ली।

***

द्वितीयसत्रम्

अन्य विद्यालयीय विषय शिक्षण –निम्नलिखित में से किसी एक विषय का चयन करें।

10–1 Teaching of English

पाठ्यक्रमकूटः – 125 (1)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100
75 Marks

Objectives-

- The Pupil teacher will be able to-
- Acquaint with the nature & aims of teaching English.
- Familiarize with approaches & methods of teaching English.
- Acquaint with the teaching of various lesson of English.
- Prepare the lesson plan of various lesson of English
- Tell the use of various instructional aids in English Teaching.
- Develop skills of evaluation of various lessons in English.

Unit-1- Nature of English Languge-

(a) Meaning & function of Language, Linguistic Principles, Importance of english Language, Present position of English in school Curriculum. Aims & Objectives of teaching English at primary, Secondary & Higher Secondary Lavels. Behavioural Objectives Meaning & Writing behavioural Objectives for prose, Poetry & Grammar lessons.

Unit-2- Approaches & Methods of teaching English

Meaning & their different Approaches - Situationl, Structural & Communicative.Methods- Translation, Direct & Billingual.

Unit-3- Teaching of Various lesson in English

Teaching of prose, Poetry, Grammar, Composition, Reading& Writing (Based on school curriculum)

Unit-4- lesson Planning & use of Teaching Learing Material

Meaning, Importance, Formats for various types of lesson in English viz. prose, poetey, Grammar, Composition. Teaching learning Material- Meaning Improtance, Precaution, Use of aids in English-Black Board, Flannel Board, pictures, Charts, Modle, Tape recorder, Record player. TV.OHP & Language Laboratory.

Unit-5- Evaluation in English Teaching

Concept of Evaluation, Measurement & Testing. Different Types of Question-Objective, Short Answer and Essay Type (Meaning, Characteristics, type &Their constucation) Characteristics of a good test for measuring learning outcomes in English.

Sessional Work- Any two of the following- 25 Marks

1- Preparing lesson plan on any one topic related ro prose, poetry & Grammar.
2- Preparing Teaching Learing Material for teaching any topic in various lesson of English.
3- Developing communication skills in English.
4- Preperation of an Achievement test of english Language.

Suggested Readings-

1- Sachdeva, M.S (2003) Teaching of English In India, Tandon Publication, Ludhiana.
2- Pandey,K.p. Teaching of English in India, Vishwavidyalaya prakashn Varanasi.
3- Jain R.K. Sharma (2005) Essentials of English, Vinod Pustak Mandir, Agra.
4- Kohli A.L., (1996) Techniques of teaching English Dhanpat Rai & Sons Nai Sarak New Delhi.
5- Sharma Kusum (2007) A Hand Book of English Teaching, Radha Prakashn Mandir, Agra.

***

10–2 हिन्दी–शिक्षण

पाठ्यक्रमकूटः – 125 (2)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों में–

- हिन्दी भाषा का महत्त्व तथा उसके उद्देश्यों से अवगत कराना।
- साहित्यिक विधाओं के शिक्षण के लिए विधि–प्रविधियों एवं दृश्यश्रव्य सामग्री का चयन एवं निर्माण करने योग्य बनाना।
- उच्चारण एवं वर्तनीगत दोषों की पहचान करना तथा सुधारात्मक युक्तियों के अनुप्रयोग से परिचित कराना।
- हिन्दी भाषा शिक्षण की विधाओं की पाठ योजना निर्माण से सुदक्ष बनाना।

पाठ्य–वस्तु –

75 अंक

इकाई– 1–हिन्दी भाषा की अवधारणा, उद्देश्य, महत्त्व एवं पाठ्यक्रम में स्थान।

इकाई– 2–भाषा कौशल (क) वाचन एवं लेखन शिक्षण– वाचन,अभिप्राय। भेद–सस्वर वाचन, मौन वाचन एवं द्रुत वाचन। लेखन शिक्षण–अभिप्राय, सुलेख अनुच्छेद, श्रुतलेख। (ख) हिन्दी भाषा विज्ञान–ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान। स्वर एवं व्यंजन, बल अनुत्तान से सम्बन्धित विशेषताएं, शब्द निर्माण एवं वाक्य रचना।

इकाई– 3–पाठ्यपुस्तक एवं दृश्य श्रव्य उपकरण। पाठ्यपुस्तक– आवश्यकता, उद्देश्य, आन्तरिक एवं बाह्य गुण। दृश्य श्रव्य उपकरण, आवश्यकता, महत्त्व प्रयोग एवं नवाचार।

इकाई– 4–हिन्दी की विधाओं का शिक्षा –गद्य, पद्य, व्याकरण, नाटक, निबन्ध का स्वरूप, शिक्षण उद्देश्य, शिक्षण विधियां तथा पाठ योजना।

इकाई–5 हिन्दी साहित्य में रुचि उत्पन्न करने के साधन–कवि सम्मलेन, कविगोष्ठी, विद्यालय पत्रिका, भित्ति पत्रिका, अभिनय, वाद–विवाद, अन्त्याक्षरी। हिन्दी के विकास में कार्यरत संस्थाओं की भूमिका।

सत्रीय कार्य–

25 अंक

1 अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2 शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3 क्षेत्रीय कार्य।
4 क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. शर्मा, ब्रजेश्वर, भाषाशिक्षण और भाषा विज्ञान केन्द्रीय हिन्दी भाषा आगरा, उ0प्र0।
2. भाई योगेन्द्रजीत, हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा उ0प्र0।
3. श्रीवास्तव, रवीन्द्र, भाषा शिक्षण मैकमिलेन कम्पनी दरियागंज, नई दिल्ली।

***

10–3 सामाजिक–शिक्षण

पाठ्यक्रमकूटः – 125 (3) **श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04**
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम् **अंकाः– 100**

उद्देश्य– छात्राध्यापकों में–

- सामाजिकविज्ञान की अन्तर्विषयी प्रकृति से परिचित कराना।
- कक्षा परिस्थिति में सामाजिक विज्ञान की विभिन्न शिक्षण विधियों को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की जानकारी देना।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इकाई योजना और पाठयोजना का निर्माण करने की जानकारी देना।
- समाजिकविज्ञान शिक्षण में सहायकसामग्री का निर्माण तथा प्रयोग करने की तथा मूल्यांकन की जानकारी प्रदान करना।

पाठ्यवस्तु – **75 अंकाः**

इकाई– 1 सामाजिक अध्ययन का स्वरूप

अवधारणा, अन्तर्विषयी प्रकृति, उद्देश्य, महत्त्व और क्षेत्र।

इकाई– 2 सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम

पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में अन्तर, पाठ्यक्रम निर्माण तथा सिद्धान्त। राष्ट्रीय केन्द्रिक पाठ्यचर्चा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में)।

इकाई– 3 सामाजिक अध्ययन की प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षण विधियां एवं प्रविधियां

विधि एवं प्रविधि में अन्तर, विधि–व्याख्यानविधि, प्रदर्शनविधि, प्रोजेक्ट विधि, वार्तालापविधि, समस्या समाधान विधि, प्रविधियां– प्रश्न पूछना, अवलोकन, वादविवाद, सम्भाषण, पैनल चर्चा, मस्तिष्क मन्थन।

इकाई– 4 सामाजिक अध्ययन की शिक्षण में पाठयोजना

इकाई योजना और पाठयोजना में अन्तर, पाठयोजना की आवश्यकता और महत्त्व, पाठयोजना के सोपान, अनुदेशनात्मक उद्देश्य, (इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र शिक्षण के सन्दर्भ में), हरबार्ट की पंचपदीय प्रणाली।

इकाई– 5 सामाजिक अध्ययन मे दृश्य श्रव्य उपकरण और सामुदायिक संसाधनों का उपयोग

दृश्य–श्रव्य उपकरण का महत्त्व और उपयोग, सामाजिक अध्ययन में प्रयोगशाला, सामुदायिक संसाधनों का महत्त्व और शिक्षक की भूमिका, सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मूल्यांकन।

सत्रीय कार्य– **25 अंक**

1. अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2. शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3. क्षेत्रीय कार्य।
4. क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. पाठक, आर.पी. (2010) दि टींचिग ऑफ सोशल स्टडीज अटलांटिक पब्लिशर्स दरियागंज, नई दिल्ली।
2. तनेजा, वी. आर. (1988) सामाजिक अध्ययन शिक्षण मार्डन पब्लिशिर्स लुधियाना।
3. शर्मा वेणीमाधव, 1980) सामाजिक अध्ययन की शिक्षा, धनपतराय एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
4. रामपाल सिंह (1985) सामाजिक अध्ययन शिक्षण, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
5. चौधरी और गोयल (1990) स्किल्स इन सोशल स्टडीज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. शर्मा, एम.बी. (1988) सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधि, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. त्यागी, गुरुसरन दास (1994) सामाजिक अध्ययन शिक्षण , आलोक प्रकाशन, लखनऊ।

***

तृतीयसत्रार्द्धम्

कुल अंक– 600कुल क्रेडिटस–24+2*

विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण

उद्देश्य–विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक दक्षता का विकास करना है जिसे निम्नलिखित उद्देश्यों द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जायेगा।

छात्राध्यापको को–

- वास्तविक विद्यालय परिवेश का अनुभव प्रदान करना।
- विद्यालय गतिधियों से परिचित कराना।
- वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण कार्य का अवसर प्रदान करना।
- पाठयोजना अनुसार शिक्षण का अवसर प्रदान करना।
- पाठयक्रम में निर्धारित शिक्षण विषयों के शिक्षण में पारंगत कराना।

विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्वरूप–

समय अवधि 16 सप्ताह	पाठ्यक्रमीय क्रियायें	छात्राध्यापकों द्वारा कार्य
1 सप्ताह	**विद्यालय परिवेश को जानना।** –सम्बद्ध विद्यालय के नियमित अध्यापकों के अध्यापन कार्य का अवलोकन। –सम्बद्ध विद्यालय की गतिविधियों एवं अभिलेखों पर आधारित प्रतिवेदन। –सम्बद्ध विद्यालय के सामुदायिक परिवेश का प्रेक्षण एवं प्रतिवेदन।	**प्रेक्षण आख्या**
1 सप्ताह	कक्षा शिक्षण अभिमुखीकरण (सम्बद्ध विद्यालय के शिक्षकों एवं अध्यापक प्रशिक्षक के निर्देशन में)	
10 सप्ताह	पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास– उच्च प्राथमिक स्तर–6-8thकक्षा का –दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। –विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग।	**पाठयोजना** **30 (15+15)**
4 सप्ताह 2 सप्ताह 2 सप्ताह	क– पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास–माध्यमिक स्तर 9-10thकक्षा –दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। –विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग। या ख– पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास–माध्यमिक स्तर 9-10thकक्षा –दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। –विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग। –पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास–उच्च माध्यमिक स्तर 11-12thकक्षा –दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। –विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग।	**पाठयोजना** **20 (10+10)** **पाठयोजना** **10 (5+5)** **पाठयोजना** **10 (5+5)**
	समीक्षा पाठ– –समीक्षा पाठ प्रस्तुतीकरण हेतु अभ्यास। –समीक्षा पाठ मूल्यांकन। –सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण	**पाठयोजना 04** सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण आधारित प्रतिवेदन

तृतीयसत्रार्द्धम्

विद्यालय आधारित प्रशिक्षण मूल्यांकन प्रक्रिया स्वरूप (कुल अंक – 600)

बाह्य परीक्षण (400) **योगात्मक मूल्यांकन**	**आन्तरिक परीक्षण (100)** **संरचनात्मक मूल्यांकन**	**प्रायोगिक कार्य (100)**
1.संस्कृत शिक्षण विषय –200 2.अन्य शिक्षण विषय –200 **<u>प्रत्येक शिक्षण विषय परीक्षण हेतु अंक वितरण</u>** **(क)** प्रायोगिक शिक्षण परीक्षण – (100 अंक) **(ख)** पाठयोजना व अन्य रिर्पोट के आधार पर मूल्यांकन–(50 अंक) **(ग)** प्रयुक्त शिक्षण सहायक सामग्री (50 अंक)	1. प्रेक्षण आख्या – 10 2. शिक्षणाभ्यास प्रेक्षण– 50 क–6-8thकक्षा का –30 अंक ख–i-9-10thकक्षा का –10 अंक या (ख) ii-9-10thकक्षा का –10 अंक एवं 11-12thकक्षा का –20 अंक **<u>समीक्षा पाठ</u>** क–उच्च माध्यमिक स्तर –20 अंक ख–i माध्यमिक स्तर –20 अंक या ख–ii – माध्यमिक स्तर–10 अंक– उच्च माध्यमिक स्तर –10 अंक	1. विद्यालय आधारित गतिविधियों मे प्रतिभाग एवं प्रतिवेदन लेखन (30 अंक) 2. विद्यालय / कक्षा आधारित समस्याओं पर आधारित क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना (30 अंक) 3. सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण आधारित प्रतिवेदन (20 अंक) 4. सम्बद्ध विद्यालय पार्श्व चित्र (20 अंक)

कुल पाठ योजना– 50

1	उच्च प्राथमिक स्तर –6-8th	30 पाठ (15 पाठ / शिक्षण विषय)
2	(क)माध्यमिक स्तर –9-10th	10 पाठ (5 पाठ / शिक्षण विषय)
2	(ख)उच्च माध्यमिक स्तर –11-12th	10 पाठ (5 पाठ / शिक्षण विषय)
अथवा 2 क एवं 2 ख के स्थान पर		
3	.माध्यमिक स्तर (9–10 कक्षा)	20 पाठ (10 पाठ / शिक्षण विषय)
कुल समीक्षा पाठ योजना– 04		
1	उच्च प्राथमिक स्तर –6-8th	2 पाठ (1 पाठ / शिक्षण विषय)
2	(क)माध्यमिक स्तर –9-10th	1 पाठ (अन्य विद्यालयीय शिक्षण विषय)
2	(ख)उच्च माध्यमिक स्तर –11-12th	1 पाठ (संस्कृत शिक्षण विषय)
अथवा 2 क एवं 2 ख के स्थान पर		
3	माध्यमिक स्तर (9–10 कक्षा)	2 पाठ (1 पाठ / शिक्षण विषय)

चतुर्थसत्रार्द्धम

पर्यावरण–शिक्षा
एकादशं पत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 161
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्यानि – छात्राध्यापकेषुः–

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

- विद्यार्थिषु पर्यारणीयचेतनां तथा च सततविकासं प्रति बोधस्य विकासः।
- पारिस्थितिकीतंत्रस्य संरचनायाः तथा जैविकविविधतायाः महत्त्वं प्रति जागरूकतोत्पादनम्।।
- जलवायुपरिवर्तनस्य कारणानां प्रभावानां च वैज्ञानिकबोधस्य विकासः।
- पर्यावरण–अवनयनस्य कारणानि तथा नियन्त्रणोपायं प्रति जागरूकतायाः विकासः।
- विविध–प्रदूषणप्रकाराणां तथा तेषां नियन्त्रणोपायानां बोधः।
- पर्यावरणीयसंसाधनानां सतत–उपयोगस्य तथा प्रबन्धनस्य क्षमताविकासः।
- अपशिष्ट–प्रबन्धन–विधीनां बोधेन स्वच्छ–पर्यावरण–निर्माण–क्षमतायाः विकासः।
- आपदः प्रति जागरूकता तथा तेषां प्रबन्धनद्वारा सुरक्षा–कौशलस्य विकासः।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1 पर्यावरणशिक्षा **75 अंका**

अवधारणा, उद्देश्यम्, महत्त्वं तथा आवश्यकता। पर्यावरणीयचेतना। वैदिककालस्य सन्दर्भे मानवप्रकृत्योः सम्बन्धः। पर्यावरणसंरक्षणाय संवैधानिकप्रावधानानि।

अन्वितिः 2– मानवः पर्यावरणं च

मानवपर्यावरणसम्बन्धः, पारिस्थितिकी–सम्प्रत्ययः, महत्त्वं, परितंत्र–अभिप्रायः, घटकाः, प्रकाराः। जैवविविधतायाः सम्प्रत्ययः महत्त्वं च।

अन्वितिः 3– पर्यावरणीय संरक्षणम्

जलभूमिवायुध्वनिनाभिकीयप्रदूषणस्य कारणानि च निवारणस्य उपायः। वायुगुणवत्तासूचकांकः (AQI)।

अन्वितिः 4–सुस्थिरविकासः

सम्प्रययः, आवश्यकताः, लक्ष्यं महत्त्वं च। स्वास्थ्यरक्षणं वनसंरक्षणं च। पर्यावरणविधिः, पर्यावरणीयसंरक्षणे सर्वकारीयसंस्थायाः विकासः पर्यावरणं च (G-20SDG)

अन्वितिः 5–पर्यावरणप्रबन्धनम्

अवधारणाः, क्षेत्रम्, अपशिष्टः,–अभिप्रायः, प्रकाराः–ई–अपशिष्टम्, प्लास्टिक अपशिष्टम्, ठोस अपशिष्टप्रबन्धनम्, पारिस्थितिकीक्लब, शैक्षिकपर्यटनम्।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः–

1. सक्सेना, ए.बी. पर्यावरण शिक्षा (शिक्षा के संदर्भ में), आर्यबुक डिपो, दिल्ली।
2. सिंह, सविन्द्र, पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, 20– ए यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
3. इ. गा. रा. मु. विश्वविद्यालय, पर्यावरण और संसाधन ।
4. फेडोरेव, ई. मेन एण्ड. (1980) द इकोलोजिकल क्राअसेज एण्ड सोसल प्रोग्रेस, नेचरप्रोगेरपब्लिशर्स, मास्को
5. रघुवंशी डॉ0 अरूण पर्यावरण तथा प्रदूषण, म.प्र. हिंदी ग्रन्थ अकादमी, चन्द्रलेखा भोपाल।
6. यूनेस्को (1977) ट्रेन्ड्स इन इनवायरमेन्टल एजूकेशन, यूनेस्को, पेरिस ।

***

चतुर्थसत्रार्द्धम्

मूल्यशिक्षा व्यावसायिकाचारश्च

(Value Education & Professional Ethics)

द्वादशं पत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 162
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्यानि – छात्राध्यापकाः–

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

- मूल्यशिक्षायाः अवधारणया आवश्यकतया च परिचिताः भविष्यन्ति।
- मूल्यानां वर्गीकरणं स्रोतांसि च ज्ञास्यन्ति।
- मूल्यशिक्षणस्य विभिन्नविधीनां प्रयोगे सक्षमाः भविष्यन्ति।
- व्यक्तित्वविकासे मूल्यशिक्षामाध्यमेन व्यावसायिकप्रतिबद्धतां विकासयिष्यन्ति।

पाठ्यवस्तु– **75 अंका –**

अन्वितिः 1–मूल्यशिक्षा

स्वरूपम्, उद्देश्यं, मूल्यपरकशिक्षायाः विकासः, मानवीयमूल्यानाम् अवधारणा अवश्यकता, तदुद्देश्यं महत्वं च । हितोपदेश–नीतिशतक–उपनिषत्सु मूल्यशिक्षा। स्वातन्त्र्योत्तरशिक्षानीतिषु मूल्यशिक्षा।

अन्वितिः 2– मूल्यानां वर्गीकरणम्

शैक्षिक–व्यावसायिक–सामाजिक–सौन्दर्यात्मक–नैतिक–आध्यात्मिकमूल्यानां वर्गीकरणम्। शैक्षिकमूल्यानाम् अभिप्रायः
उद्देश्यानि अनुप्रयोगश्च।

अन्वितिः 3–मूल्यशिक्षायाः विधयः

विद्यालयीयविषयैः पाठ्यसहगामिक्रियाभिश्च मूल्यानाम् आभ्यन्तरीकरणं। भूमिकानिर्वहणं, मूल्यस्पष्टीकरणं विश्लेषणं च, कथाकथनं चर्चाविधिश्च।

अन्वितिः 4–व्यक्तित्वविकासाय मूल्यशिक्षा

भारतीयसन्दर्भे आत्मबोधः, आत्मविश्लेषणम् आत्मदर्शनम्, आत्मनियन्त्रणं धैर्यं, त्यागः, रचनात्मकता, परोपकारिता, लैंगिकसमानतां प्रति संवेदीकरणं वैज्ञानिकदृष्टिः च। शिक्षकाय व्यावसायिकाचारः।

अन्वितिः 5– राष्ट्रस्य विश्वस्य च विकासे मूल्यशिक्षा

राष्ट्रिय–अन्ताराष्ट्रियमूल्यानि। संवैधानिकमूल्यानि, यथा–जनतान्त्रिकमूल्यानि, समाजवादः, धर्मनिरपेक्षता, समानता, न्यायः, स्वतन्त्रता, विश्वबन्धुत्वं च।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः–

1. जैश्री, (2008) मूल्य, पर्यावरण और मानव अधिकार की शिक्षा, शिप्रा प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, नई दिल्ली।
2. गुप्त, नत्थूलाल, (2005) मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. चतुर्वेदी, रश्मि, खण्डाई, हेमन्त, (2011) मूल्य शिक्षा, ए0 पी0 एच0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली।

***

चतुर्थसत्रार्द्धम्

सूचना एवं सम्प्रेषणतकनीक्याः शिक्षायाम् अनुप्रयोगः

(Application of ICT)

त्रयोदशं पत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 163
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्यानि– छात्राध्यापकेभ्यः

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

- संगणकस्यावधारणाकार्यप्रणालीनां च ज्ञानप्रदानम्।
- 'अन्तर्जाल तथा ई–मेल' इत्यनयोः शैक्षिकोपयोगस्य परिचयप्रदानम्।
- संगणकाधारिता अधिगमस्यावधरणानां ज्ञान–प्रदानम्।
- सूचना सम्प्रेषण प्रविधेः सम्प्रेषणसम्प्रत्ययानां च परिचयप्रदानम्।
- एम.एस.आफिस इत्यनेन सम्बन्धितशैक्षिकानुप्रयोगस्य कौशलविकासः।

पाठ्यवस्तु– 75 अंका –

अन्वितिः 1– संगणकम्

अभिप्रायः, घटकाः अदा (इनपुट) प्रदा (आउटपुट) केन्द्रियप्रक्रिया एककः (सीपीयू) सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट इत्येतस्य कार्यप्रणाली, एप्लीकेशन सिस्टम–सॉफ्टवेयर, संगणकसंजालम्, कम्प्यूटर नेटवर्क – अभिप्रायः, आवश्यकता प्रकारश्च (LAN, MAN WAN) इत्येतेषां शैक्षिकोपयोगिता।

अन्वितिः 2– अन्तर्जालम् (इन्टरनेट)

अभिप्रायः कार्यविधिः, इन्टरनेट प्रोटोकाल– फाइल ट्रान्सफर प्रोटोकाल (F.T.P) फाइल टेक्स्ट ट्रान्सफर प्रोटोकाल (FTTP) इति एतेषां शैक्षिकोपयोगः। ईमेल (अणुसंकेत) अभिप्रायः, कार्यविधिः, शैक्षिकोपयोगश्च।

अन्वितिः 3– संगणकाधारिताधिगमः

ई–अधिगमः–अभिप्रायः, वैशिष्ट्यम् प्रारूपम् अवलंबः (Support) मिश्रितः, (Blended) सम्पूर्णः (Complete) सम्प्रेषणरीतयः एसिन्क्रोनस, सिन्क्रोनस इत्येतेषां लाभाः दोषाश्च। संगणकसहाय्यानुदेशनम् (CAI) अभिप्रायः, मान्यताः प्रयुक्तप्रविधयः (हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर कोसवेयर) इत्येतेषां शैक्षिकोपयोगः। संगणकप्रबन्धितानुदेशनम् (CBI) अभिप्रायः, भेदाः (परम्परागताधुनिकश्च) एतेषां शैक्षिकोपयोगिता।

अन्वितिः 4–सूचना तथा सम्प्रेषणतकनीकी

अभिप्रायः भेदाः, (परम्परागताधुनिकश्च) एतेषां शैक्षिकोपयोगिता। सम्प्रेषणम्–अभिप्रायः, प्रक्रिया, विविधमाध्यमाः, विविधभेदाः, बाधकतत्त्वानि च। टेलीकाफ्रन्सिंग–अभिप्रायः भेदाः। (ऑडियो, वीडियों संगणक च)।

अन्वितिः 5–एम.एस. आफिस

एम.एस. वर्ड (MSword) अभिप्रायः, डाक्यूमेंट विन्डो– (घटकः, टूलबार, बटन, स्टेन्डर्ड एवं फार्मेटिंग टूलबार बटन), डाक्यूमेंट (क्रियेट, ओपन एवं also) टेक्स्ट सलेक्ट, एडिट, कट, कॉपी, पेस्ट, फार्मेटिग एम.एस. पावर पाइन्ट (M.S. power point) अभिप्रायः, घटकाः, स्लाइड–निर्माणम्, अभिकल्पनं तथा प्रस्तुतीकरणं शैक्षिकोपयोगश्च। एम. एस. एक्सेल (M.S. Excel) अभिप्रायः, घटकाः, स्प्रेडशीट, वर्कशीट एतेषां शैक्षिकोपयोगः।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

***

चतुर्थसत्रार्द्धम्

योगः स्वास्थ्यं शारीरिकशिक्षा च
चतुर्दशं पत्रम्

पाठ्यक्रमकूटः – 164
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

उद्देश्यानि– छात्राध्यापकेभ्यः–

- योगशिक्षायाः अवधारणाज्ञानेन सह योगस्य विभिन्न पद्धतीनां ज्ञानप्रदानम्।
- योगासनस्य प्राणायामस्य च महत्त्वपुरस्सरं योगसाधनायाः योगचिकित्सायाः महत्त्वस्य परिचय–प्रदानम्।
- उत्तमस्वास्थ्याय संतुलितभोजनस्य व्यायामस्य च आवश्यकतायाः उपयोगितायाश्चावबोधनम्।
- शारीरिकशिक्षायाः अवधारणा तस्याः मनोवैज्ञानिकपक्षस्य परिचयप्रदानम्।
- विद्यालयेषु शारीरिकशिक्षायाः विविधपक्षाणां परिचयप्रदानम्।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1– भारते योगपरम्परा **75 अंका**

अवधारणा, योगशिक्षायाः आवश्यकता, विधयः आयामश्च। योगस्य विभिन्नपद्धतयः ज्ञानयोगः, भक्तियोगः, कर्मयोगश्च। मानव–जीवने एतेषाम् उपयोगः महत्त्वं च।

अन्वितिः 2–योगासनं प्राणायामश्च

आसनप्राणायामयोः स्वरूपम्, प्रकारः–पवन–मुक्तासनम्, सूक्ष्म–व्यायामः, सूर्यनमस्कारः, ताटकम्, धनुरासनम्, पश्चिमोत्तानासनम्, पद्मासनम्, सर्पासनम्, गोमुखासनम्, मकरासनम्, भुजंगासनम्, शीर्षासनम् ताडासनम्, अनुलोमः विलोमः (नाडी शोधनम्), शीतली, शीतकारी, उज्जायी, भ्रामरी। योगसाधनायाः योगचिकित्सायाः जीवने महत्त्वम्।

अन्वितिः 3–स्वास्थ्यशिक्षा

अवधारणा, उत्तमस्वास्थ्याय भोजनस्य महत्त्वम्, भोजनस्य पोषकतत्त्वानां कार्याणि कुपोषणं च। आमिषं निरामिषं च भोजनम्, भोजनस्य मुख्यतत्त्वानि, सन्तुलिताहारः। विविधव्यायामाः तथा आसनानां स्वास्थ्य–सन्दर्भे महत्त्वम्। आसनविषयकविकृतयः कारणं निराकरणम् उपचारश्च।

अन्वितिः 4–शारीरिक–शिक्षा

अवधारणा, उद्देश्यानि महत्त्वं क्षेत्रं च। शारीरिकशिक्षायाः आवश्यकता सम्पूर्ण–शैक्षिक–प्रक्रियायां शारीरिकशिक्षायाः स्थानम्। शारीरिकशिक्षायाः मनोवैज्ञानिकपथः–क्रीडामनोविज्ञानम्, क्रीडासु उपलब्धिः, अभिप्रेरणा। रुचयः, अभिवृत्ति, शिक्षकछात्रसम्बन्धः, क्रीडाभावना आचारसंहिता च।

अन्वितिः 5 विद्यालयेषु शारीरिकशिक्षा

विद्यालयेषु क्रीडाप्रकाराः व्यक्तिगत–क्रीडा, सामूहिकक्रीडा च तेषां सामान्य नियमाः, महत्त्वं च। विद्यालयीयस्तरे, अन्तर्विद्यालयीयस्तरे, अन्तर्वर्गीयस्तरे, अन्तर्सदनीयस्तरे, अन्तर्विभागीयस्तरे च वार्षिकक्रीडाप्रतियोगितानाम् आयोजनं महत्त्वं च।

सत्रीयकार्यम् **25 अंकाः**

1. अन्वितिसम्बद्धं कक्षाप्रस्तुतीकरणम्।
2. शोधपत्रलेखनम्/परियोजनाकार्यम्।
3. क्षेत्रीयकार्यम्।
4. क्रियाशील–प्रतिरूप–निर्माणम्।

अध्येयग्रन्थाः–

1. पुरूषार्थी, योगेन्द्र, वेदों में योग विद्या।
2. आत्रेय, शान्ति प्रकाश, योगमनोविज्ञान।
3. मुखर्जी, विश्वनाथ, भारत के महान योगी।
4. शास्त्री, विजयपाल, पातजंल योग विमर्श ।
5. पातजंल योगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर।
6. शर्मा, रमा, शारीरिक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
7. शैरी, जी0पी0, स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
8. सुखिया, एस0पी0, विद्यालय प्रशासन, संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
9. वर्मा, रामपाल सिंह, विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
10. वर्मा, के0 के0 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, दीपक पब्लिशर्स, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

चतुर्थसत्रार्द्धम्

निर्देश– निम्नलिखित में से कोई एक

समावेशित शिक्षा
(Inclusive Education
पञ्चदशं पत्रम् (1)

पाठ्यक्रमकूटः – 165 (i)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्यम् – छात्राध्यापकों में

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

- समावेशित शिक्षा के आधुनिक परिप्रेक्ष्य का तर्काधार समझने की योग्यता विकसित करना।
- शिक्षा में समावेशित शिक्षा की अवधारणा का प्रबल आधार खोजने की संवेदनशीलता लाना।
- विशेष संवर्ग के बच्चों की शिक्षा की आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर शैक्षणिक हस्तक्षेपों एवं नवाचारी युक्तियों के अनुप्रयोग की कुशलता विकसित करना ।
- राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट शिक्षा के सन्दर्भ में चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों तथा विकलांगता को दूर करने हेतु सूचना–प्रौद्योगिकी के योगदान से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु–

इकाई – 1 विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु संस्थानों का योगदान

राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका, विकलांगता और भारतीय पुनर्वास परिषद, विकलांगता को कम करने लिए सूचना– प्रौद्योगिकी का योगदान।

75 अंक

इकाई– 2 विशिष्ट शिक्षा

अवधारणा, उद्देश्य, प्रकार महत्त्व एवं क्षेत्र। विकलांग बालकों की शिक्षा का विकास।

इकाई– 3 शैक्षिक इन्टरवेन्शन

एकीकरण की प्रक्रिया, विकलांगता के अनुसार कार्यात्मक योग्यताओं का आकलन। विकलांगता एवं सहायक सेवाएं संस्थान कक्ष।

इकाई –4 पाठ्यक्रम अनुशीलन

अवधारणा, विकलांगता के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम अनुशीलन, पाठ्यसहगामी क्रियाएं एवं संचालन, विकलांगता एवं नवाचार।

इकई – 5 समावेशित शिक्षा

अवधारणा, उद्देश्य, तत्त्व, महत्त्व, कक्षा शिक्षण विधियां, समावेशित शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान।

सत्रीय कार्य :

25 अंक

1. अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2. शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3. क्षेत्रीय कार्य।
4. क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. शर्मा आर0 ए0, (2005) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, लायल बुक डिपो, मेरठ
2. विष्ट, आभा रानी, (1992) विशिष्ट बालक का मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. सिंह बी0 बी0, (1990) विशिष्ट शिक्षा, वैशाली प्रकाशन, गोरखपुर।
4. Gary Thomas And Mark Vaughan, (2004) Inclusive Education- ReadingAnd Refolections'' Bletchley : Open University Press Book And 18.99 pp 215
5. Panda K.G. (2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas publishing House Private Ltd., New Delhi.
6. Peshwaria R, (2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas publishing House Private Ltd., New Delhi.
7. India Vision, The Report of the Committee of India, Planning Commission, 2020Gvt. Of India Published Academic Foundation,New Delhi.
8. Thomas G, (1997) Inclusive Schools for An Inclysive Society, British Journal of Special Education
9. Stainback S. and stainback W, (1990) Inclusive Education, Baltimore, Paul Brokers, Puvlishing Company

***

चतुर्थसत्रार्द्धम्

निर्देशन एवं उपबोधन
(Guidance& Counselling)
पञ्चदशं पत्रम् (2)

पाठ्यक्रमकूटः — 165 (ii)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्य — छात्राध्यापकों में—

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः— 100

- निर्देशन एवं उपबोधन के मूलभूत तत्वों का कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सम्बन्ध में बोध कराना।
- निर्देशन की प्रक्रिया तथा विभिन्न स्तरों पर निर्देशन कार्यक्रमों के आयोजन से परिचित कराना।
- वृत्ति के विकास सम्बन्धित विभिन्न तत्त्वों से अवगत कराना।
- उपबोधन सेवाओं की प्रविधियों से परिचित कराना।
- निर्देशन एवं उपबोधन में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपादेयता एवं औचित्य से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु —

इकाई — 1 निर्देशन **75 अंक**

अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य, क्षेत्र, मूलभूत सिद्धान्त, निर्देशन के प्रकार— शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत । निर्देशन तथा परामर्श में अन्तर तथा अन्तर्सम्बन्ध।

इकाई — 2 निर्देशन की प्रक्रिया तथा विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रम

समूह निर्देशन तथा व्यक्तिगत निर्देशन, निर्देशन की प्रविधियां, बुलेटिन बोर्ड, कक्षावार्ता, वृत्तिक सम्मेलन, वृत्तिक प्रदर्शनियां, विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालयों) पर निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन।

इकाई —3 वृत्तिक विकास

प्रकृति, प्रक्रिया, प्रभावित करने वाले कारक, वृत्तिक विकास में सूचनाओं का एकत्रीकरण तथा प्रसार, स्थानन सेवा तथा अनुवर्ती सेवा।

इकाई — 4 उपबोधन

अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य उपबोधन की प्रविधियां — निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक उपबोधन। उपबोधक की भूमिका तथा अच्छे उपबोधक के गुण।

इकाई — 5 निर्देशन एवं उपबोधन में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षण

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का अर्थ, आवश्यकता तथा उद्देश्य, वर्गीकरण— बुद्धि, व्यक्तित्व, रुचि उपलब्धि तथा अभिक्षमता परीक्षण, निर्देशन एवं उपबोधन में परीक्षणों एवं परीक्षणेतर विधियों का उपयोग।

सत्रीय कार्य **25 अंक**

1. अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2. शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3. क्षेत्रीय कार्य।
4. क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ—

1. Jayswal,S.R. (1995) Guidance & Counselling, Prakashan Kendra, Lucknow
2. Traxller, Arthur E. (1957) Techniques, Harper and Br other Publishers N.Y
3. वर्मा आर. पी. एवं उपाध्याय आर. वी., (1995) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
4. Jones. J. (1995)Principlesof Guidance, MC Graw Hill Book Co. N.Y.
5. Kochar, S.K (1984) Guidance and Counselling in Collage and Universities Sterling Publishers Pvt. Ltd.

***

चतुर्थसत्रार्द्धम्

जेण्डर विद्यालय एवं समाज
(Guidance School& Society)
पञ्चदशपत्रम् (3)

पाठ्यक्रमकूटः – 165 (iii)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
उद्देश्य – छात्राध्यापकों में–

श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः– 100

- माध्यमिक स्तर पर जेण्डर संवेदीकृत शिक्षको का विकास करना।
- शिक्षा के माध्यम से जेण्डर संवेदीकृत समाज का विकास।
- अन्तर्विषयी उपागम को विकसित करना।
- शिक्षको मे जेण्डर अनुकूलित दृष्टिकोण को विकसित करना।
- शिक्षकों मे जेण्डर विषमता (स्टीरियो टाइप चिन्तन) को समाप्त करना।

पाठ्यवस्तु –

75 अंक

इकाई– 1 जेण्डर बोध

अध्ययन का अभिप्राय, आवश्यकता एवं क्षेत्र। अध्यापक शिक्षा में महत्व। जेण्डर आधारित संकल्पनाएं, लिंग, जेण्डर, पितृसत्ता, नारी समता, नारीवादिता, जेण्डर बजटिंग, जेण्डर स्टीरियों टाइप तथा जेण्डर समावेशित।

इकाई–2 महिला शिक्षा

साक्षरता दर तथा लैगिंग अनुपात और इनको प्रभावित करने वाले कारक। महिला सशक्तीकरण, आवधारणा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, संकेत, राष्ट्रीय योजनाएं तथा नीतियां।

इकाई–3 महिलाओं का योगदान

वर्तमान संदर्भ में समाज, राजनीति, विज्ञान, तकनीकी, प्रबन्धन में। भारत की प्रसिद्ध महिलाएं एवं उनका योगदान। (भारतीय प्राचीन साहित्य के विशेष सन्दर्भ में)।

इकाई – 4 जेण्डर , राष्ट्र एवं समुदाय

जेडर संवेदीकरण–अवधारणा एवं आवश्यकता, यू.जी.सी की सक्षम योजना।

इकाई – 5 महिला एवं सूचना माध्यम

महिला एवं वैश्वीकरण, महिला एवं स्वास्थ्य। महिला एवं कानूनी अधिनियम।

सत्रीय कार्य–

25 अंक

1 अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2 शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3 क्षेत्रीय कार्य।
4 क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ –

1. वासु, एजुकेशन इन मॉडन इण्डिया (ओरिएण्ड बुक कम्पनी)
2. भगवानदयाल, दी डेवलपमेंट ऑफ माडर्न इण्डियन एजूकेशन (ओरियण्ट– लोंगमास)
3. गुप्ता, एस.पी. भारतीय शिक्षा का इतिहास व समस्याएं, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद
4. कबीर, हुमायूं, एजूकेशन इन न्यू इण्डिया।
5. रस्तोगी, के.जी. भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं।
6. सिंहल, एम.पी. भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएं।
7. पाठक, आर. पी. एजूकेशन इन दि एमरजिंग इंडिया, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
8. सच्चिदानन्द, ए.पी. एवं देवनाथ, आर, आधुनिकशिक्षायाः विकासः नवशिक्षानीतिश्च।

***

चतुर्थसत्रार्द्धम्

कला शिक्षा
(Art Education)
पञ्चदशपत्रम् (4)

पाठ्यक्रमकूटः – 165 (IV)
घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रियान्वयनकालः 04
अंकाः– 100

उद्देश्य – छात्राध्यापकों में

- कला शिक्षा में प्रयुक्त महत्वपूर्ण अवधारणाओं का बोध कराना।
- विभिन्न कक्षाओं के लिए इकाई योजना, पाठ योजना तथा वार्षिक योजना निर्माण करने की क्षमता का विकास करना।
- विद्यालय पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों के समीक्षात्मक मूल्यांकन का अवबोध कराना।
- उपलब्धि तथा निदानात्मक परीक्षणों के निर्माण, प्रशासन तथा प्रदत्त विश्लेषण में सक्षम बनाना।
- उपयुक्त दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का निर्माण तथा कक्षा में प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग का अवबोध कराना।
- क्षेत्र भ्रमण (field trips) तथा प्रदर्शनियों का आयोजन करना सिखाना ।

पाठ्यवस्तु–

75 अंक

इकाई – 1 कला शिक्षा की प्रकृति, क्षेत्र तथा अवधारणा

कला शिक्षा की संरचना, आवश्यकता तथा विद्यालयी पाठ्यक्रम में इसका स्थान। क्षेत्र, प्रकृति तथा कला की अवधारणा, कला का शैक्षिक मूल्य तथा अन्य विषयों से सम्बन्ध, कला तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, भारतीय कलाकारों का योगदान, कला तथा समाज, भारतीय लोक कथाएं, सृजनात्मक कला।

इकाई – 2 कला शिक्षण के अनुदेशनात्मक उद्देश्य तथा प्रविधि

कला शिक्षण के लक्ष्य तथा उद्देश्य, विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर कला शिक्षण तथा सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य, कला के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का विकास, कला शिक्षण के सिद्धान्त, कला शिक्षण की प्रविधियां।

इकाई – 3 अनुदेशनात्मक सहायक प्रणाली

संसाधन सामग्री, कला का प्रबन्धन तथा संगठन, कला शिक्षण में दृश्य सहायक सामग्री– श्यामपट्ट, कलात्मक वस्तुएं तथा उनका पुनर्निमाण, छायाचित्र तथा अन्य सामग्री, पाठ्य पुस्तकें, कला अध्यापक, कला कक्ष, पाठ्य सहगामी क्रियायें, प्रारम्भिक शिक्षा में सृजनात्मक गतिविधियों का महत्व, कला तथा सामाजिक रूप में उपयोगी कार्य (SUPW) लाइन,रंग, छपाई, सामग्री कठपुतली तथा आवरण (Mask)

इकाई – 4 कला शिक्षण में नवाचार

दल शिक्षण (Team Teaching) क्षेत्र भ्रमण (Field Trips) सामुदायिक संसाधन संगणक, दूरदर्शन, क्लब, संग्रहालय, विषय प्रयोगशाला, आर्ट गैलरी, प्रदर्शनियां, राजस्थानी लोक कला का सर्वेक्षण, छायाचित्रों का संकलन, कला–चित्र संग्रह पुस्तिका (एलबम) प्राचीन वस्तुएं।

इकाई – 5 कला शिक्षण की योजना तथा मूल्यांकन

मूल्यांकन की अवधारणा तथा लक्ष्य, उद्देश्य तथा प्रक्रिया आधारित मूल्यांकन। अध्यापक निर्मित परीक्षण, विभिन्न प्रकार के प्रश्नों, ब्लूप्रिन्ट तथा पत्र निर्माण, विषयवस्तु विश्लेषण, इकाई योजना, दैनिक पाठ योजना तथा वार्षिक योजना की तैयारी निर्माण, प्रशासन तथा मूल्यांकन।

सत्रीय कार्य–

25 अंक

1 अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2 शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3 क्षेत्रीय कार्य।
4 क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ –

1. Gearge Conard, (1964) The Process of Art education in theelementary school practice hall,inc England, Cliets NO.1.
2. Ruth Dunneth, (1945) Art and child personality, Methuen and co. ltd, London.
3. Arya jaides, Kala ke adhyapana, Vinod Postak Mandir, Agra.
4. Kiya Shilahak, (1966) Vol.No.4, Special Number, Art Education Published by Department of Education, Rajasthan, Bilaner.
5. AAMS, Memorandum on the teaching of Art London.

चतुर्थसत्रार्द्धम्

मानवाधिकार शिक्षा
(Human Rights Education)
पञ्चदशपत्रम् (5)

पाठ्यक्रमकूटः — 165 (v)
क्रियान्वयनकालः 04 घण्टा/प्रतिसप्ताहम्
श्रेयोऽङ्कः/क्रेडिट्स 04
अंकाः— 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को –

- भारत में मानवाधिकारों की अवधारणा से परिचित कराना।
- भारतीय तथा अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मनावाधिकारों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।
- विशिष्ट वर्गों के अधिकारों का अवबोध कराना।
- मानवाधिकरों के सन्दर्भ में राज्य तथा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगों की भूमिका तथा कार्यप्रणाली से परिचित कराना।
- मानवाधिकार के लिए कार्यरत विभिन्न संस्थाओं की भूमिका से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु–

75 अंक

इकाई – 1 मानवाधिकार

अर्थ,अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य।

इकाई– 2 भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार

मानवाधिकार का इतिहास एवं विकास। मानवाधिकार के सार्वभौमिक घोषणापत्र का परिचय, संविधान में वर्णित अधिकार– शिक्षा, जीवन,स्वतन्त्रता–समानता, सामाजिक–आर्थिक, अधिकार एवं कर्त्तव्य।

इकाई– 3 विशिष्ट वर्गों के अधिकार

बालकों तथा सुविधा वंचित वर्गो के अधिकार।

इकाई– 4 भारत में मानवाधिकार सम्बन्धित प्रयास

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग , राज्य स्तरीय मानवाधिकार आयोग, बाल अधिकार संरक्षण आयोग एवं महिला आयोग का सक्षिप्त परिचय एवं कार्यप्रणाली।

इकाई– 5 : मानवाधिकार के अभिकरण

मानवाधिकार के लिए कार्यरत विभिन्न संस्थायें, जनसंचार के माध्यम।

सत्रीयकार्य–

25 अंक

1. अन्विति से सम्बद्ध कक्षा प्रस्तुतीकरण।
2. शोधपत्र लेखन/परियोजना कार्य।
3. क्षेत्रीय कार्य।
4. क्रियाशील प्रतिरूप निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. गुप्त नत्थुलाल, (2005) मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन दिल्ली।
2. मौर्या, गीता (2011) मानव अधिकार अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।
3. हूडा राम निवास (2008) मानव अधिकार शिक्षा के.एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
4. Kaul, Anjana (2011) Human Rights Education, APH Publishing Corporation, New Dehli